विभिन्न संस्कृतियाँ

विभिन्न संस्कृतियाँ शृंखला, भाग–5, लज्जा की नींव पर स्थापित संस्कृति में परमेश्वर की कहानी

डॉ॰ डेविड प्लॉट

अपनी अपनी बाइबल, यदि है, तो अध्याय 4 खोल लीजिए।

हमारे प्रत्येक अध्ययन में हमारे पास अवसर होता है कि अपने विश्वास को बांटे, बताएं कि परमेश्वर हमारे विश्वासियों के परिवार में कैसे काम कर रहा है। हमारे पास अनेक ऐसी कहानियां आती हैं परन्तु एक कहानी विशेष ध्यान के योग्य है। मैंने पत्रों का अवलोकन किया तो मुझे ज्ञात हुआ कि यह कहानी हमारे आराधना दल की है जो बेनेजूएला, होनड्युराज़ जाता है। हमारा एक दल तो जाकर आ गया था अब दूसरा दल जाने के लिए तैयार था जिसमें सौ सदस्य थे। कोई घटना ऐसी घटी कि ब्रुक हिल्स एयर लाइन्स का वेनेजूएला स्थित कार्यालय का कर्मचारी पुलिस द्वारा पकड़ा गया और वहां का सारा काम रुक गया। परिणाम स्वरूप हमारी उड़ान रद्द की दी गई। अब हम रविवार तक नहीं जा सकते थे परन्तु हमारा दल यथासंभव प्रयास कर रहा था कि किसी भी प्रकार जितने भी लोग जा सकें जाएं। हमारे कुछ सदस्यों के संपर्क वेनेजूएला ट्रेवल एजेंसी से हैं। अतः उन्होंने लगभग 70 सदस्यों को किसी न किसी उड़ान में स्थान दिला दिया। वे प्रसन्न नहीं थे कि तीस सदस्य नहीं जा पा रहे हैं। महिनों की तैयारी के बाद निराशा!

मैंने उन्हें पत्र लिखा क्योंकि मैं उन्हें इस प्रयोजन में दो मुख्य बातें स्मरण कराना चाहता था। पहली, महान् आदेश का आरंभ यीशु के इन शब्दों के साथ है, ''स्वर्ग और पृथ्वी का पूरा अधिकार मुझे दिया गया है।'' अर्थात् यीशु को अधिकार है कि वह स्वर्ग और पृथ्वी को पलट दें अर्थात् वह वायुयान को भी उड़ान भरने योग्य बनाए। उसके अधिकार पर अवर्णित परिस्थितियों में भी विश्वास किया जा सकता है।

अति संभव है कि परमेश्वर यहां भी नियंत्रण में है।

वहां पहुंचकर हमने उन बस चालकों को लिया जिन्हें हमने पहले नहीं लिया था। यह चालक हमें एक अत्यधिक ग़रीब समुदाय में ले गया। वहां हमारा दल भोजन बांट रहा था और सुसमाचार की चर्चा कर रहा था। वह बस चालक एक निवासी से पूछने लगा, ''ये लोग क्या कर रहे हैं? उनके चेहरों पर आशा और आनन्द क्यों है जबकि वे ऐसी दरिद्र परिस्थिति के मध्य हैं?'' उस वेनेजूएला निवासी को अवसर प्राप्त हुआ कि बस चालक को मसीह द्वारा लाया गया अन्तर समझाएं। बस चालाक ने उससे कहा, ''मैं भी उनकी

आशा और आनन्द पाना चाहता हूं। क्या तुम मुझे यीशु के बारे में बताओगे?'' उस बस चालक ने मसीह को ग्रहण करने के लिए प्रार्थना की। ''स्वर्ग और पृथ्वी का सब अधिकार मुझे दिया गया है।''

जी हां, वह वायुयान को उड़ाने के लिए पर्वत को हटा सकता है। वह पहाड़ को हटा कर मनुष्यों को अपने पिता के संबन्ध में भी ला सकता है – उद्धार दिला सकता है।

इस घटना से दूसरी बात जो हमें स्मरण रखना है वह यह है, यदि हम अपने आप को परमेश्वर के प्रयोजन में समर्पित करते हैं तो हमें यत्नशील बनना है। यह आसान नहीं है क्योंकि इसमें अनेक परीक्षाएं आएंगी। तथापि हमें यत्न करना है। परमेश्वर पर भरोसा रखना है।

हमारा दल वहां आराधना करवा रहा है और हमारे इन अध्ययनों की शिक्षा वहां के 200 पास्टरों को दे रहा है जो भविष्य में इसकी शिक्षा क्यूबा में देंगे। क्यूबा एक ऐसा स्थान है जहां हमारा पहुंचना कठिन है। इस प्रकार क्यूबा की आराधनाओं में वचन केन्द्र का स्थान पाएगा। यह हमारी इन अध्याय श्रृंखलाओं का परिणाम है। परमेश्वर भला है। यत्नशील होना लाभदायक है। अतः मैं यही कहूंगा कि हम समझ नहीं पाते, प्रश्नों के उत्तर नहीं पाते, परन्तु फिर भी परमेश्वर काम कर रहा है।

संभवतः वह आपकी कार्यसूची में परिवर्तन ले आए कि उसकी महिमा के निमित्त कोई घटना घटे।

हमने परमेश्वर की कहानी अपराधबोध से ग्रस्त संस्कृति में देखी, हमने परमेश्वर की कहानी भयग्रस्त संस्कृति में देखी। स्मरण रखें हम उत्पत्ति तीन में वर्णित पाप के तीन परिणामों को देख रहे हैं – अपराधबोध, भय और अब हम देखेंगे लज्जा। हम देख रहे हैं कि विभिन्न संस्कृतियों में पाप के ये परिणाम सिर उठाते हैं। किसी में एक अधिक तो दूसरी में दूसरा अधिक तो तीसरी में तीसरा अधिक। हमने यह भी देखा है कि पश्चात्य संस्कृति अपराधबोध से ग्रस्त है जहां हम उचित और अनुचित के आधार पर चलते हैं। हमने देखा है कि परमेश्वर की कहानी हमारे अपराधबोध पर कैसे प्रभाव डालती है। पिछले अध्ययन में हमने भय ग्रस्त संस्कृति के विषय में देखा था। लेटिन अमरीका की संस्कृतियां अफ्रीका की संस्कृतियां, एशिया की अनेक संस्कृतियां अपराधबोध से अधिक भय और अधिकार से प्रभावित हैं। उनमें अलौकिक शक्तियों – देवी–देवता, पूर्वजों की आत्माएं, अन्य आत्माएं आदि, का भय व्याप्त है। सुसमाचार का परमेश्वर मसीह यीशु के सामर्थ्य द्वारा उस भय का निवारण करता है।

इस अध्ययन में हम विभिन्न संस्कृतियों में लज्जा और सम्मान के विषय चर्चा करेंगे। ये शब्द परिचित अवश्य हैं परन्तु मध्य पूर्व की संस्कृतियों की तुलना में यहां अधिक स्थान नहीं रखते हैं।

मैं आपके साथ हमारे मध्यपूर्व राष्ट्रों के सेवकों के अनुभव बांटना चाहता हूं।

एक सेवक ने लिखा,

''हमारी टेक्सी अकस्मात ही रुक गई। वहां सड़क के बीच एक बालिका दम तोड़ रही थी। उसे चार गोलियां लगी थीं। उसी समय उसका भाई पुलिस लेकर आया और कहने लगा, ''यह रही। मैंने इसे मार दिया क्योंकि किसी पुरुष के साथ इसके अवैध संबन्ध थे।'' उस देश के नियमों के अनुसार वह युवक निर्दोष था। उसने हत्या नहीं की थी। उसने अपने परिवार की प्रतिष्ठा बचाई थी।

दूसरा सेवक लिखता है,

''एक बालिका अपने घर से भाग गई। उसके परिवार को पता चला कि उसने अन्य धर्म में विवाह कर लिया है। पुलिस ने उस बालिका को बन्दी बना लिया कि वह अपने परिवार के सदस्यों से सुरक्षित रहे। परिवार के वृद्ध उसके पिता और भाई को ताना दे रहे थे, ''हम कब तक सिर झुकाए रहेंगे? क्या तुम हमारे कुल की मर्यादा के लिए कुछ नहीं कर सकते कि हम सिर उठाकर जीएं?'' अन्त में परिवार ने सर्वसम्मति से निर्णय लिया कि पुलिस को पच्चीस लाख रुपए देकर उस बालिका को सुरक्षित ले आएं। उसे घर लाने के कुछ ही घंटों बाद उसके भाई और पिता ने उसे मार डाला। संपूर्ण परिवार प्रसन्न हुआ कि उनकी प्रतिष्ठा पुनः स्थापित हो गई है।

एक और घटना,

अनेक वर्ष पूर्व एक अरबी सैनिक की बन्दूक अकस्मात चल जाने के कारण दूसरे सैनिक की मृत्यु हो गई। वह उसका मित्र था। सात साल सेवा के बाद उसे एक शर्त पर सेवानिवृत्त किया गया कि वह देश छोड़कर चला जाए। वह बीस वर्ष अमरीका में रहा। एक दिन अपने परिवार से भेंट करने की मनशा से वह घर लौटा। उसके लौटने का समाचार सुनकर कुछ युवक जो उस घटना के समय पैदा भी नहीं हुए थे, उन्होंने उसके घर को घेर लिया और उसे गोली मार दी। उनकी लज्जा समाप्त हुई और प्रतिष्ठा लौट आई।

ये घटनाएं हमारे लिए प्रासंगिक नहीं है परन्तु वे विभिन्न संस्कृतियों के मान सम्मान की द्योतक है। मैंने ऐसी कहानियां सुनी थीं परन्तु व्यक्तिगत अनुभव तब पाया जब मेरा भारतीय मित्र ज़िमिर इस परिस्थिति से गुज़रा। वह अठारह या उन्नीस वर्ष का था जब उसने मसीह को ग्रहण किया। उसके परिवार को जब उसके मसीह विश्वास की जानकारी प्राप्त हुई तब उन्होंने उसे एक कमरे में बन्द करके बहुत मारा और गालियां दीं। और अन्त में उसे घर से निकाल दिया। उससे संबन्ध तौड़ दिया। वह रोते–रोते बताता था कि उसने पूरी रात द्वार पर बिताई कि कोई उसे घर में ले ले। वह संबन्धियों के पास भी गया, एक एक के पास परन्तु किसी ने उसे स्वीकार नहीं किया। अन्त में उसके पास एक शपथ पत्र भेजा गया कि वह हस्ताक्षर करे। उस शपथ पत्र पर लिखा था कि वह उसके भाइयों और पिता के अन्तिम संस्कार में नहीं आएगा। मसीह में विश्वास करके उसने अपने परिवार की प्रतिष्ठा को आहत किया था।

ये उन संस्कृतियों का चित्रण है जिनमें उचित और अनुचित का स्थान इतना नहीं है जितना मान सम्मान का। ऐसी परिस्थितियों में आप सोचते हैं कि सुसमाचार प्रचार कैसे करें? यदि हमारी समझ केवल उद्धार तक ही सीमित है तो हम निश्चय ही सोचेंगे कि ऐसी संस्कृति में जहां उचित अनुचित का कोई स्थान नहीं है, वहां सुसमाचार प्रचार कैसे किया जाए। हमें गहराई में जाना होगा। हमें सुसमाचार के विषय धर्मशास्त्र की शिक्षा की परिपूर्ण एवं विपुल जानकारी ग्रहण करना है। आपको यह सुनकर अचम्भा होगा कि नये नियम और पुराने नियम दोनों ही में लज्जा और प्रतिष्ठा मुख्य विषय हैं। आरंभ से ही परमेश्वर अपनी प्रजा को दासत्व की लज्जा से निकालकर प्रतिज्ञा के देश में लाया कि उनकी अपनी प्रतिष्ठा हो। पहली शताब्दी में भी आप देखते हैं कि यीशु भी उस समाज में था जहां परिवार, पैसा, धन–सम्पदा, शिक्षा आदि किसी व्यक्ति का मान सम्मान या भू–सम्पदा किसी कुल का मान सम्मान थी।

सुसमाचार मान सम्मान और लज्जा के इन परिप्रेक्ष्यों में कैसे प्रासंगिक होगा? मेरे साथ लूका 4:14 खोलें। हम दो पदों पर विशेष ध्यान देंगे। हमारी अध्ययन विधि यह रही है कि एक या दो विशेष पदों पर ध्यान दें जो विभिन्न संस्कृतियों के परिप्रेक्ष्य में सुसमाचार का सार प्रस्तुत करते हैं तदोपरान्त उन कहानियों को देखें जो इनका उदाहरण देती हैं जिससे कि हम लज्जा के संबन्ध में परमेश्वर की कहानी की चर्चा कर पाने में समर्थ हों।

सुसमाचार मान सम्मान और लज्जा के निवारण में कैसे काम करता है? लूका 4:14 सुनें:

''फिर यीशु आत्मा की सामर्थ्य से भरा हुआ गलील को लौटा, और उसकी चर्चा आस–पास के सारे देश में फैल गई। वह उनके आराधनालयों में उपदेश करता रहा, और सब उसकी बढ़ाई करते थे। फिर वह नासरत में आया, जहां पाला पोसा गया था; और अपनी रीति के अनुसार सब्त के दिन आराधनालय में जाकर पढ़ने के लिए खड़ा हुआ। यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक उसे दी गई, और उसने पुस्तक खोलकर, वह जगह निकाली जहां यह लिखा था: 'प्रभु का आत्मा मुझ पर है, इसलिए कि उसने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया है, और मुझे इसलिए भेजा है कि बन्दियों को छुटकारे का और अंधों को दृष्टि पाने का सुसमाचार प्रचार करूं और कुचले हुओं को छुड़ाऊं, और प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष का प्रचार करूं।' तब उसने पुस्तक बन्द करके सेवक के हाथ में दे दी और बैठ गया; और आराधनालय के सब लोगों की आंखे उस पर लगी थीं। तब वह उनसे कहने लगा, 'आज ही यह लेख तुम्हारे सामने पूरा हुआ है।''

यह यहूदी आराधनालय का पहला उल्लेख है। उनकी आराधना का आरंभ प्रार्थना और आशीर्वाद से होता था फिर वे शेमा पढ़ते थे – व्यवस्था विवरण 6:4–9, तदोपरान्त व्यवस्था का पाठ और भविष्यद्वक्ताओं का पाठ क्रमशः। वे खड़े होकर इसे पढ़ते थे फिर बैठ जाते थे और एक या दोनों पाठों की व्याख्या की जाती

थी। यीशु ऐसा ही करता है। वह भविष्यद्वक्ता यशायाह 61:1–2 पढ़कर बैठ जाता है तथा उसकी व्याख्या करता है, 'आज ही यह तुम्हारे सामने पूरा हुआ है।' यह एक साहसी कथन है। यीशु ने यशायाह 58:6 का एक अंश ओर उसमें जोड़ दिया, ''कुचले हुओं को छुड़ाऊं....'' यह लूका रचित सुसमाचार का सारांश है। यीशु अपने आने का उद्देश्य प्रकट कर रहा है। परमेश्वर ने उसे भेजा कि खेदित मन वालों को सुसमाचार सुनाए और दासों को छुटकारे का सन्देश दे, अंधों को आंखे दे और अन्धेर सहने वालों का जूआ तोड़कर उन्हें छुड़ा ले तथा परमेश्वर के प्रसन्न रहने के वर्ष का प्रचार करे। यह पुराने नियम की भविष्यवाणी की पूर्ति था। मैं चाहता हूं कि हम इस कथन को दो परिप्रेक्ष्यों में देखें।

पहला, यीशु घोषणा कर रहा है कि वह हमारी स्थिति को पलट देगा। इन पक्षों में लज्जा और मान–सम्मान को देखिए – 4:18–19 में। कंगाल, बन्दी, अन्धे और अन्धेर सहने वाले यह सब प्रथम शताब्दी की लज्जा ही तो है। दूसरी ओर मान–सम्मान का परिदृश्य है – सुसमाचार, छुटकारा, दृष्टिकोण अन्धेर सहने वालों का जूआ तोड़ना। यहां लज्जा और मान–सम्मान एक दूसरे के साथ–साथ है। प्रथम शताब्दी का समाज अलग–अलग वर्गों में विभाजित था। आपका मान–सम्मान और लज्जा अनुवांशिक थे। यह भारत की जाति–प्रथा स्वरूप था। नीचे के वर्ग में पैदा होकर आपको मान–सम्मान अर्जित करना होता था। यीशु कहता है, मेरे पास अधिकार है कि तुम्हारी स्थिति बदल दूं या भारतीय परिप्रेक्ष्य में कहें, तुम्हारी जाति बदल दूं। मेरे पास अधिकार है कि शोषित वर्ग को मुक्ति दिलाऊं। दूसरे शब्दों में यीशु कह रहा है कि वह संसार द्वारा आपको दी गई लज्जा को बदलकर आपको मान–सम्मान प्रदान करने आया है।

मैं इसे पांच विभिन्न कहानियों में आपके समक्ष रखना चाहता हूं। मैं चाहता हूं कि आप इनमे से प्रत्येक कहानी के विभिन्न पहलुओं पर विचार करें। सबसे पहले परिस्थिति के परिवर्तन पर तदोपरान्त हम विचार करेंगे कि यह सब समयों में सब मनुष्यों में कैसे व्यावहारिक होता है।

देखिए यीशु कैसे हमारी स्थिति पलट देता है – लूका 5:12,

''जब वह किसी नगर में था, तो वहां कोढ़ से भरा हुआ एक मनुष्य आया, और वह यीशु को देखकर मुंह के बल गिरा और बिनती की, 'हे प्रभु, यदि तू चाहे तो मुझे शुद्ध कर सकता है।' उसने हाथ बढ़ाकर उसे छुआ और कहा, 'मैं चाहता हूं, तू शुद्ध हो जा।' और उसका कोढ़ तुरन्त जाता रहा। तब उसने उसे चिताया, 'किसी से न कह, परन्तु जा के अपने आपको याजक को दिखा, और अपने शुद्ध होने के विषय में जो कुछ मूसा ने चढ़ावा ठहराया है उसे चढ़ा कि उन पर गवाही हो।''

गद्यांश में एक विशेष परिवर्तन है जिस पर आप ध्यान दें – अशुद्ध से शुद्ध। एक कोढ़ी यीशु के पास आता है। वह अशुद्ध है। यीशु उसे चंगाई देता है। वह शुद्ध हो जाता है। लैव्यव्यवस्था में कोढ़ियों के लिए शोधन विधियां एवं नियम दिए गए हैं। कोढ़ एक शारीरिक अवस्था है। धर्मशास्त्र में विभिन्न त्वचा रोगों को कोढ़

कहा गया है। आपके तंत्रिका तन्तु रोग के कारण क्षतिग्रस्त हो जाते हैं और आपकी संवेदना समाप्त हो जाती है जिसके कारण आपके पैर थकान का आभास नहीं करते और वे टेढ़े–मेढ़े हो जाते हैं। कोढ़ एक भयानक छूत का रोग था। कोढ़ी गंदा माना जाता था। कोढ़ी संगति योग्य नहीं था, वह घृणित व्यक्ति था। वह मनुष्यों के निकट नहीं जा सकता था। उसे चिल्लाते रहना पड़ता था, ''अशुद्ध, अशुद्ध'' कि मनुष्य उससे दूर रहें। यहां तक कि जहां कोढ़ी खड़ा था उस स्थान पर भी वे नहीं जाते थे। आप कल्पना कर सकते हैं कि किसी कोढ़ी के जीवन पर सामाजिक, मानसिक और आत्मिक कहर कैसा गिरता होगा! याशायाह पाप को कोढ़ की उपमा देता है। कोढ़ी मन्दिर में जाकर आराधना नहीं कर सकता था। लूका 5:12–14 में चंगाई शब्द काम में नहीं लिया गया है। उनकी रोग मुक्ति को शुद्ध होना कहा गया है। कोढ़ी का सब कुछ समाप्त हो जाता था – नाम, परिवार, नौकरी आदि सब। यहां आप सन्देश पर ध्यान दें – अशुद्ध से शुद्ध। उस मनुष्य के मन का बोझ देखें और समझें। वह यीशु को दण्डवत करता है और कहता है, ''यदि तू चाहे तो मुझे शुद्ध कर सकता है।'' ध्यान दीजिए उसे सन्देह नहीं कि यीशु उसे शुद्ध कर पाएगा। उसे सन्देह केवल इस बात पर था कि यीशु उसकी मदद करना चाहेगा या नहीं। उसकी बिनती में सहायता का अर्तनांद था।

यीशु उससे दूर जाने की अपेक्षा उसके निकट आता है। वह उसे स्पर्श करता है। आप उसके चेहरे पर आश्चर्य देख सकते थे क्योंकि उसे कोई छूना नहीं चाहता कि उसे भी रोग न लग जाए। वह भी अशुद्ध न हो जाए। यीशु ने दूर खड़े होकर उसके रोग को नहीं झिड़का वरन् उसको स्पर्श करके उसकी अशुद्धता ग्रहण की। यीशु हमारी अशुद्धता को अपने ऊपर लेकर हमें अपनी शुद्धता प्रदान करता है। वह कहता है, ''मैं तुम्हारा पुनः स्थापन करूंगा। लूका बल देकर कहता है कि उसका रोग तुरन्त निकल गया।

यहां हम लज्जा ग्रस्त संस्कृति का स्पष्ट चित्रण देखते हैं। आप यदि मुस्लिम आराधनालय, मस्ज़िद में जाएं तो देखेंगे कि नमाज़ी लोग जूते उतार कर हाथ, पांव मुंह धोते हैं। अल्लाह के सम्मुख आने के लिए शुद्धता अत्यधिक आवश्यक है। मुझे स्मरण आता है कि भारत में मैं अपने एक मुस्लिम मित्र के साथ टेबल पर बैठा था और मैंने बाइबल निकाली। तुरन्त ही उसने हाथ ऊपर उठा दिए। मुझे आश्चर्य हुआ कि उसे क्या हो गया है। वह कहने लगा कि इस पुस्तक का स्पर्श करने के लिए मुझे हाथ मुंह धोने होंगे। मैं उसे बाइबल देना चाहता था परन्तु वह उसे छूने से इन्कार कर रहा था क्योंकि वह अपनी अशुद्धता के कारण लज्जित था। अतः मेरा कहने का अभिप्राय यह है कि यीशु हमें अशुद्धता में स्वीकार करके हमें शुद्ध करता है। इस बाइबल पाठ के अध्ययन समय मेरा विचार हम लोगों पर गया। यहां ऐसे भी लोग हैं जिनमें अतीत के कार्यों या पाप की अशुद्धता का बोध है। आप उसे मन से निकाल नहीं पाए हैं। वह आपके जीवन में वर्षों से व्याप्त है। मैं आपको परमेश्वर के वचन से स्मरण कराना चाहता हूं कि यीशु आपसे कहता है, ''मैं तुम्हारी अशुद्धता अपने ऊपर लेना चाहता हूं और तुम्हें पुनः स्थापित कर सर्वांगीण बनाना चाहता हूं।'' यीशु आपकी

लज्जा से मुंह नहीं मोड़ता है वरन् वह आपकी ओर उन्मुख होता है। वह उन सबसे जो असहाय है कहता है, ''मैं तुम्हारा पुनरुत्थान करूंगा।''

अगली कहानी – लूका 7:35 से आगे – यीशु हमें अशुद्ध से शुद्ध बनाता है।

''फिर किसी फरीसी ने उससे बिनती की कि वह उसके साथ भोजन करे, अतः वह उस फरीसी के घर जाकर भोजन करने बैठा। उस नगर की एक पापिन स्त्री यह जानकर कि वह फरीसी के घर में भोजन करने बैठा है, संगमरमर के पात्र में इत्र लाई, और उसके पावों के पास, पीछे खड़ी होकर, रोती हुई उसके पांवों को आंसुओं से भिगोने और अपने सिर के बालों से पोंछने लगी, और उसके पांव बार–बार चूम कर उन पर इत्र मला। यह देखकर वह फरीसी जिसने उसे बुलाया था, अपने मन में सोचने लगा, 'यदि यह भविष्यद्वक्ता होता तो जान जाता कि वह जो उसे छू रही है, वह कौन और कैसे स्त्री है, क्योंकि वह तो पापिन है।' यीशु ने उसके उत्तर में कहाः 'हे शमौन, मुझे तुझ से कुछ कहना है।' वह बोला, 'हे गुरु, कहो। किसी महाजन के दो देनदार थे, एक पांच सौ और दूसरा पचास दीनार का देनदार था। जब उनके पास पटाने को कुछ न रहा, तो उसने दोनों को क्षमा कर दिया। इसलिये उनमें से कौन उससे अधिक प्रेम रखेगा?' शमौन ने उत्तर दिया, 'मेरी समझ में वह, जिसका उसने अधिक छोड़ दिया।' उसने उससे कहा, 'तूने ठीक विचार किया है।' और उस स्त्री की ओर फिरकर उसने शमौन से कहा, 'क्या तू इस स्त्री को देखता है? मैं तेरे घर में आया परन्तु तू ने मेरे पांव धोने के लिए पानी न दिया, पर इसने मेरे पांव आंसुओं से भिगोए और अपने बालों से पोंछा। तू ने मुझे चूमा न दिया, पर जब से मैं आया हूं तब से इसने मेरे पांवों को चूमना न छोड़ा। तू ने मेरे सिर पर तेल नहीं मला, पर इसने मेरे पांवों पर इत्र मला है। इसलिए मैं तुम से कहता हूं कि इसके पाप जो बहुत थे, क्षमा हुए, क्योंकि इसने बहुत प्रेम किया; पर जिसका थोड़ा क्षमा हुआ है, वह थोड़ा प्रेम करता है।' और उसने स्त्री से कहा, ''तेरे पाप क्षमा हुए।'' तब जो लोग उसके साथ भोजन करने बैठे थे, अपने–अपने मन में सोचने लगे, 'यह कौन है जो पापों को भी क्षमा करता है?' पर उसने स्त्री से कहा, 'तेरे विश्वास ने तुझे बचा लिया है, कुशल से चली जा।'''

यीशु हमें अशुद्ध से शुद्ध बनाता है। दूसरा, यीशु हमें तिरस्कृत से स्वीकृत बनाता है। वहां की प्रथा ऐसी थी कि जब बड़े लोग भोजन करते थे तब आमंत्रित न किए गए लोग खड़े होकर देखते थे और उनका सौभाग्य होता था कि बचा हुआ भोजन उन्हें मिल जाए। यह स्त्री भी वहां अलग खड़ी थी। वह अकस्मात ही आकर यीशु के चरणों में लिपट जाती है। वह जानीमानी दुराचारी स्त्री थी। वह उसके पांवों को आंसुओं से धोकर बालों से पोछती है और फिर उन पर इत्र लगाती है। सब से पहले तो एक स्त्री और एक यहूदी गुरु कभी सार्वजनिक रूप से आमने–सामने नहीं होते थे। ''यदि यीशु भविष्यद्वक्ता होता तो जान लेता कि वह स्त्री

कौन थी और वह उसे दूर हटा देता,'' शिमौन के मन में विचार उठे। अतः उसने निष्कर्ष निकाला कि यीशु भविष्यद्वक्ता नहीं था।

अब यह स्त्री पाप के कारण तिरस्कृत थी। यदि आप इस घटना को कालक्रम में रखें तो यह यीशु की घोषणा के तुरन्त बाद की है जब उसने कहा, ''हे सब परिश्रम करने वालों और बोझ से दबे हुए लोगों, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा।'' (मत्ती 11:28) इस स्त्री के मन में कुछ तो हुआ कि उसे उस पर विश्वास हो गया कि वह उसे तिरस्कृत से स्वीकृत स्थिति में ले आएगा। अतः मैं चाहता हूं आप यहां उन सब को देखें जो व्यथित हैं, जो दुःखी हैं जो पाप के कारण तिरस्कृत हैं। उन सबसे यीशु कहता है, ''मेरे पास आओ।'' इस दृश्य की मनोहरता से न चूकें। यह गद्य हमें नहीं सिखाता कि पहले अपने आप का सुधार करें तब यीशु के पास आएं। वह जैसी थी वैसी ही उसके पास आ गई क्योंकि उसके मन में विश्वास था और यीशु ने उससे कहा कहा? 'तेरे विश्वास ने तुझे बचा लिया। कुशल से चली जा।'' यीशु ने उसका पुनरुत्थान किया। उसने कहा, ''मैं तुझे ग्रहण करूंगा और तेरी वेदना ले लूंगा जो तूने पाप से कमाई है। मेरा अनुग्रह तुझे बदल देगा।'' यह शुभ सन्देश है।

हम सबके लिए यह सन्देश है हमने अतीत में कुछ भी किया हो। कल कुछ भी किया हो, हमें यह समझ लेना है कि यीशु के पास आने के लिए हमें सुधार करके, शुद्ध होकर नहीं आना है। हम अपनी अशुद्धता में ही आ जाएं। उसका अनुग्रह हमें बदल देगा। उसका उद्धार कर्म आधारित नहीं है। हमें मसीह का सम्मान पाने के लिए कुछ करना नहीं है। वह हमारे पापी दशा में ही हमें सम्मान देता है। अपने अनुग्रह के द्वारा, वह कहता है, मैं तुम्हें ग्रहण करूंगा।

अगली कहानी लूका 15:11–24 यीशु अपने पिता के प्रेम का वर्णन करता है।

''किसी मनुष्य के दो पुत्र थे। उनमें से छोटे ने पिता से कहा, 'हे पिता सम्पत्ति में से जो भाग मेरा हो वह मुझे दे दीजिए।' उसने उनको अपनी सम्पत्ति बांट दी। बहुत दिन बीते थे कि छोटा पुत्र सब कुछ इकट्ठा करके दूर देश को चला गया और वहां कुकर्म में अपनी सम्पत्ति उड़ा दी। जब वह सब कुछ उड़ा चुका, तो उस देश में बड़ा अकाल पड़ा, और वह कंगाल हो गया। इसलिए वह उस देश के निवासियों में से एक के यहां जा पड़ा। उस ने उसे अपने खेतों में सूअर चराने के लिए भेजा। और वह चाहता था कि उन फलियों में से जिन्हें सूअर खाते थे, अपना पेट भरे; और उसे कोई कुछ नहीं देता था। जब अपने आपे में आया तब कहने लगा, 'मेरे पिता के कितने ही मजदूरों को भोजन से अधिक रोटी मिलती है, और मैं यहां भूखा मर रहा हूं। मैं अब उठकर अपने पिता के पास जाऊंगा और उससे कहूंगा कि पिताजी, मैंने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टि में पाप किया है। अब इस योग्य नहीं रहा कि तेरा पुत्र कहलाऊं, मुझे अपने एक मजदूर के समान रख ले।' तब वह उठ कर, अपने पिता के पास चला; वह अभी दूर ही था कि उसके पिता ने उसे

देखकर तरस खाया, और दौड़कर उसे गले लगाया, और बहुत चूमा। पुत्र ने उससे कहा, 'पिता जी, मैंने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टि में पाप किया है; और अब इस योग्य नहीं रहा कि तेरा पुत्र कहलाऊं।' परन्तु पिता ने अपने दासों से कहा, 'झट अच्छे से अच्छा वस्त्र निकालकर उसे पहनाओ, और उसके हाथ में अंगूठी, और पांवों में जूतियां पहिनाओं और पला हुआ बछड़ा लाकर मारो ताकि हम खाएं और आनन्द मनाएं। क्योंकि मेरा यह पुत्र मर गया था, फिर जी गया हैः खो गया था, अब मिल गया है।' और वे आनन्द करने लगे।''

यीशु हमें अशुद्ध से शुद्ध बनाता है, तिरस्कृत से स्वीकृत बनाता है और खोए हुए से पाया हुआ बनाता है। पुत्र अपना उत्तराधिकार मांगता है जो वास्तव में पिता के मरणोपरान्त होता था। उसकी इस मांग का निहितार्थ यह हुआ कि वह पिता की मृत्यु चाहता था। वह अपने पिता के लिए लज्जा का कारण था। अन्ततः वह सारा धन व्यर्थ गंवा देता है और सूअरों को चरा रहा है। उसे खाने के लिए भी नहीं मिलता है। उसका मन सूअरों का खाना खाने को तरसता है। यह बहुत बुरी दशा है। थक–हार कर वह घर लौटने का निर्णय लेता है। घर के निकट आकर वह सोच ही रहा था कि उसका पिता क्या करेगा तभी उसका पिता भाग कर आता है और उसे गले लगाता है। वह उसके लौटने की प्रतीक्षा कर रहा था। अति उत्तम चित्रण! हम कहीं भी भटक जाए हमें स्मरण रखना है कि हमारे पास एक पिता है जो प्रतीक्षा करता है। धर्मशास्त्र में यही एकमात्र स्थान है जहां हम देखते हैं कि पिता भागकर आता है। परमेश्वर भी भाग कर मिलने आता है। पिता भाग कर क्यों आता है? पुत्र प्रेम से अभिभूत वह उसे अपना प्रेम दिखाना चाहता है परन्तु इससे भी अधिक। मैं चाहता हूं कि इस दृष्टान्त के विषय आपकी समझ में परिवर्तन आए। मेरे साथ व्यवस्था विवरण 21 देखें, ''यदि किसी के हठीला और दंगैत बैटा हो, जो अपने माता पिता की बात न माने, किन्तु ताड़ना देने पर भी उनकी न सुने, तो उसके माता–पिता उसे पकड़कर अपने नगर से बाहर फाटक के निकट नगर के पुरनियों के पास ले जाएं, और वे नगर के पुरनियों से कहे, 'हमारा यह बेटा हठीला और दंगैत है, यह हमारी नहीं सुनता; यह उड़ाऊ और पियक्कड़ है।' तब उस नगर के सब पुरुष उसे पथराव करके मार डालें.....'' कैसा कठोर दण्ड! यहां लज्जा और मान–सम्मान का प्रश्न आता है। पिता के भाग कर उसे गले लगाने का अर्थ था उसे पथराव से बचाना। पिता उसके पाप ढांक रहा था। यदि किसी ने उसे पत्थर मारना चाहा तो पिता सामने था। वे सब जो निराश स्थिति में है, उनसे यीशु कहता है, ''मैं तुम्हें बचाऊंगा।'' परमेश्वर उन्हें बचाने की शीघ्रता करता है चाहे वे लज्जा का कारण ही क्यों न हों। पिता ने कहा, ''उसे नया वस्त्र पहनाओ। उसे अंगूठी पहनाओ। उसके पांवों में जूती पहनाओ। वह दास नहीं पुत्र है।'' क्योंकि परमेश्वर अपने लोगों को बचा लेता है।

मैं नहीं जानता कि कभी आप पाप में ऐसे घिरे हैं कि आप पूरी तरह निराश हुए? आपने सोचा कि आप कभी उभर कर नहीं आएंगे? या ऐसे मनुष्य को आप जानते हैं? स्मरण रखें कि हम एक ऐसे परमेश्वर की

सेवा करते हैं जो अपने लोगों को पाप और संसार की बातों से बचा लेता है। वह अपने लोगों को पाप की लज्जा से उभार लेता है।

एक और कहानी जिसके दो भाग हैं और हम इन्हें अलग–अलग देखेंगे – लूका 16:19 – पहला भागः

''एक धनवान मनुष्य था जो बैंजनी कपड़े और मलमल पहनता और प्रतिदिन सुख–विलास और धूम–धाम के साथ रहता था। लाज़र नाम का एक कंगाल घावों से भरा हुआ एक कंगाल उसकी डेवड़ी पर छोड़ दिया जाता था। और वह चाहता था कि धनवान की मेज़ पर की जूठन से अपना पेट भरे; यहां तक कि कुत्ते भी आकर उसके घावों को चाटते थे। ऐसा हुआ कि वह कंगाल मर गया, और स्वर्गदूतों ने उसे लेकर अब्राहम की गोद में पहुंचाया। वह धनवान भी मरा और गाड़ा गया, और अधोलोक में उसने पीड़ा में पड़े हुए अपनी आंखें उठाईं, और दूर से अब्राहम की गोद में लाज़र को देखा। तब उसने पुकार कर कहा, 'हे पिता अब्राहम, मुझ पर दया करके लाज़र को भेज दे, ताकि वह अपनी ऊंगली का सिरा भिगोकर मेरी जीभ को ठंडा करे, क्योंकि मैं इस ज्वाला में तड़प रहा हूं।' परन्तु अब्राहम ने कहा, 'हे पुत्र, स्मरण कि तू अपने जीवन में अच्छी वस्तुएं ले चुका है, और वैसे ही लाज़र बुरी वस्तुएंः परन्तु अब वह यहां शान्ति पा रहा है, और तू तड़प रहा है। इन सब बातों को छोड़ हमारे और तुम्हारे बीच एक भारी गड़हा ठहराया गया है कि जो यहां से उस पार तुम्हारे पास जाना चाहें, वे न जा सके; और न कोई वहां से इस पार हमारे पास आ सके।''

मैं चाहता हूं कि आप देखें कि यीशु हमें कैसे निर्धन से धनवान बनाता है। इस गद्यांश में महान् परिवर्तन है। वह धनवान व्यक्ति बैंजनी वस्त्र पहनता था जो उसके वैभव का प्रतीक था। दूसरी ओर लाज़र या जिसके घाव कुत्ते चाटते थे। गरीबी का कैसा भयानक चित्रण! परन्तु उनके मरणोपरान्त परिस्थिति बदल जाती है। लाज़र अब्राहम के साथ विश्राम में है और वह धनवान मनुष्य पीड़ा में है। यह यीशु द्वारा हमें निर्धनता से वैभव में लाने का चित्रण है। लूका रचित सुसमाचार में हर जगह ग़रीबी पर बल दिया गया है और यीशु को ग़रीबी में काम करते दिखाया गया है। ग़रीबी सांसारिक ही नहीं आत्मिक भी है। इस दृष्टान्त का अर्थ यह न निकालें कि यदि हम सांसारिक रूप से यहां निर्धन हैं तो मरणोपरान्त धनवान बन जाएंगे या यहां धनवान हैं तो मरणोपरान्त नरक में होंगे। अब्राहम तो उस धनवान से भी अधिक धनवान था। यहां मुख्य विषय है, परमेश्वर पर भरोसा करना। हमारी आर्थिक स्थिति का संबन्ध भी इससे है। ग़रीबों में आप विश्वास की सच्चाई और शुद्धता देखते हैं। क्योंकि उनके पास सांसारिक आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं है इसलिए उनका भरोसा परमेश्वर पर अधिक है परन्तु समृद्ध संसार में हम परमेश्वर से अधिक सांसारिक वस्तुओं पर भरोसा करते हैं। अतः हम यहां ग़रीबी से समृद्धि में परिवर्तन होता देखते हैं। यीशु उनसे कह रहा है जो दीन हैं, जो परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं। यीशु कहता है, ''मैं तुम्हें प्रतिफल दूंगा।'' मरने से पूर्व और मरने के पश्चात् दोनों स्थानों में प्रतिफल है। अन्तर केवल यही है कि मृत्यु पूर्व धनवान का प्रतिफल है

परन्तु आत्मिक संसार में सब कुछ बदल जाता है। वहां हमें सम्मान कमाना नहीं है, परमेश्वर हमें सम्मान देता है। परमेश्वर सब दीन मनुष्यों से कहता है, ''जो मुझ में विश्वास रखेगा चाहे यह जीवन कुछ भी दे – संपन्नता या विपन्नता, मैं तुम्हें प्रतिफल अवश्य दूंगा।'' यहां हमें जो देखना है, वह है, दीनता!

अन्तिम परिदृश्य लूका 18:25 यीशु यरूशलेम की ओर जहां वह क्रूस चढ़ाया जाएगा।

''जब वह यरीहों के निकट पहुंचा, तो एक अंधा सड़क के किनारे बैठा हुआ भीख मांग रहा था। वह भीड़ के चलने की आहट सुनकर पूछने लगा, 'यह क्या हो रहा है?' उन्होंने बताया, 'यीशु नासरी जा रहा है।' तब उसने पुकार के कहा, 'हे यीशु, दाऊद की सन्तान, मुझ पर दया कर!' जो आगे जा रहे थे, वे उसे डांटने लगे कि चुप रहे; परन्तु वह और भी चिल्लाने लगा, 'हे दाऊद की सन्तान मुझ पर दया कर!' 'तब यीशु ने खड़े होकर आज्ञा दी कि उसे मेरे पास लाओ, जब निकट आया तो उसने उससे पूछा, 'तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिए करूं?' उसने कहा, 'हे प्रभु यह कि मैं देखने लगूं।' यीशु ने उससे कहा, 'देखने लग; तेरे विश्वास ने तुझे अच्छा कर दिया है।' तब वह तुरन्त देखने लगा और परमेश्वर की बड़ाई करता हुआ उसके पीछे हो लिया; और सब लोगों ने देखकर परमेश्वर की स्तुति की।''

हमने देखा कि यीशु ने अशुद्ध को शुद्ध किया, तिरस्कृत को स्वीकृत किया, खोए हुओं को पाया, ग़रीबों को धनवान बनाया। अब हम देखेंगे कि वह दृष्टिहीन को दृष्टि देता है।

मरकुस हमें बताता है कि इस मनुष्य का नाम बरतीमई था। अंधे मनुष्य को सड़क के किनारे ही रहना होता है। यीशु ने क्या किया? उसने केवल यही कहा, ''देख'' इसे गहराई में देखें। यीशु कहता है, ''देख, मुझे देख।'' ध्यान दें यीशु क्रूस की ओर अग्रसर है। देखने वाले अनेक जन हैं और उनके मन में यीशु के लिए सन्देह है कि वह कौन है। परन्तु इस अंधे व्यक्ति को पता है कि यीशु कौन है। ''हे यीशु दाऊद की सन्तान, मुझ पर दया कर।'' ''तेरे विश्वास ने तुझे अच्छा किया।'' यीशु अंधकार में ज्योति प्रदान करता है। उसने उस अंधे व्यक्ति पर अपने को प्रकट किया। वह सड़क के किनारे भीख मांग रहा था परन्तु अब यीशु के साथ चल रहा है और परमेश्वर की स्तुति कर रहा है। वह अपने अंधेपन के कारण यीशु की वास्तविकता देखने में सक्षम था। यही कारण था कि उसे सर्वांगीणता प्राप्त हुई।

यीशु हमारी स्थिति को पलट देता है। यहां हमारे पास ऐसी पांच स्थितियां हैः अशुद्ध से शुद्ध, तिरस्कृत से स्वीकृत, खोए से पाए, निर्धन से धनवान, और दृष्टिहीन से दृष्टिवान। परन्तु कहानी का अन्त यहां नहीं होता है। लूका रचित सुसमसाचार में लज्जा और सम्मान का दृश्य दिखाना चाहता हूं। यह यीशु के क्रूसीकरण और पुनरुत्थान में निहित है। हमारे पाप की लज्जा उस पर डाल दी गई, उसकी निन्दा की गई, उसे कोड़े मारे गए, उसके मुंह पर थूंका गया, वह क्रूस पर कीलों से ठोंका गया। वह लज्जित हो क्रूस पर लटका हुआ है और लोग उसे देख रहे हैं। उसकी संपूर्ण लज्जा पुनरुत्थान के कारण सम्मान में बदल गई।

यह सब देख हमें यीशु के वचन याद आते हैं जो उसने लूका अध्याय 4 में कहे, ''मैं दासों को छुटकारा दिलाने और परमेश्वर के प्रसन्न होने के वर्ष की घोषणा करने आया हूं।'' यशायाह 61 और लैव्यव्यवस्था 25 में जुबली वर्ष का उल्लेख है जो हर पचासवां वर्ष है जिसमें सबको ऋण मुक्ति प्रदान की जाती थी। अतः यीशु ने कहा, ''मैं दासों को मुक्त कराने आया हूं।'' उसने मनुष्य के पाप हर लिए और क्रूस पर चढ़ गया। उन्हें पाप के दासत्व से मुक्त किया।

लज्जा ग्रस्त संस्कृति में सुसमाचार का यह दृश्य है। यीशु आपकी लज्जा में आपसे कहता है, ''मैं तुम्हें मुक्ति दिलाता हूं।'' आप इस पर मनन करें कि उसने आपकी लज्जा को कैसे हटाया क्योंकि यह आपके लिए बड़ा अर्थ रखता है यदि आप लज्जा ग्रस्त संस्कृति में सुसमाचार सुनाना चाहते हैं।